VOL- X | ISSUE- VI | JUNE | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि का अध्ययन

कैलाश
(शोधकर्त्री)

डॉ. गुंजन शर्मा
(शोध निर्देशिका)

मनुष्य के शैक्षणिक विकास में उसकी बुद्धि, मानसिक योग्यताओं, कल्पना, चिंतन, भावना और संकल्पना इत्यादि मानसिक प्रक्रियाओं का विकास सम्मिलित है। इन सब मानसिक प्रक्रियाओं में बुद्धि का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। बुद्धि के कारण ही मनुष्य में निर्णय शक्ति, सामान्य सूझ, कार्य करने में अग्रणीयता, किसी बात को भली–भांति समझकर उसके सम्बन्ध में अपने तार्किक विवेचन के द्वारा उचित निर्णय लेकर परिवर्तनशील परिस्थितियों में स्वयं को सुसन्तुलित एवं सुव्यवस्थित रखने का प्रयास किया है।

अच्छा स्वास्थ्य शरीर एवं मन की स्थिति पर निर्भर करता है। दोनों का मनुष्यके स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। स्वस्थ व्यक्ति केवल शारीरिक रुप से ही नहीं, बल्कि मानसिक रुप से भी स्वस्थ होता है। स्वास्थ्य का अर्थ है कि शरीर एवं मनदोनों कुशलतापूर्वक एवं संतुलित रुप से काम कर रहे हैं। मानसिक स्वास्थ्य मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

बुद्धि–

साधारण भाषा में बुद्धि एक प्रकृति का वरदान है। यह उसकी क्षमता है जो उसके सारी जटिल समस्या को सफलतापूर्वक सुलझा देती है तो हम कहते है कि उस व्यक्ति ने बुद्धिमानी का कार्य किया है। इस प्रकार बुद्धि मनुष्य की समस्या को सुलझाने में सहायता करती है।

बुद्धिमता से कार्य करने वाला नवीन समस्याओं को सुलझाने में अपने पूर्ववर्ती अनुभव को ध्यान में रखता है तथा तर्क का प्रयोग करता है। अपनी कल्पनाशक्ति द्वारा भविष्य को सामने रखते हुए उलझन से बाहर निकलने के उपाय ढूँढ़ निकालता है।

बुद्धि मनुष्य की एक योग्यता है। इसमें अनेक मानसिक योग्यताऐं समन्वति रूप से निहित है। बुद्धि द्वारा व्यक्ति को व्यवहारिक जीवन में सफलता प्राप्त करने में सहायता मिलती है। यह नवीनतम परिस्थितियों में व्यक्ति का समायोजन कायम रखने में विशेष रूप से क्रियाशील रहती है। इसका सम्बन्ध अनुभवों के विश्लेषण एवं आवश्यकताओं के नियोजन तथा पुर्नगठन से होता है। 'बुद्धि' शब्द एक

विशेषण है संज्ञा नहीं। यह एक अमूर्त सप्रत्यय है जिसे व्यवहार के आधार पर समझा जा सकता है। बुद्धि व्यक्ति की यह संयुक्त और समग्र क्षमता है। जिसके द्वारा वह उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है। विवेकपूर्ण चिन्तन करता है। और अपने वातावरण का प्रभावशाली ढंग से सामना करता है । बुद्धि में व्यक्ति की वे मानसिक व ज्ञानात्मक योग्यतायें सम्मिलित हैं जो उसे जीवन की वास्तविक समस्याओं कों सुलझाने में सहायता देती हैं। और उसके आनन्दपूर्ण संतुष्ट जीवन यापन में सहायक होती है। बुद्धि एक परिकल्पनात्मक शक्ति है। बुद्धि को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता, बल्कि उसके प्रभावों को ही देखा जा सकता है। अतः बुद्धि एक अमूर्त चिन्तन की योग्यता है।

न्यादर्श—

प्रस्तुत शोध कार्य के दत्त संकलन कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा राजस्थान राज्य के अजमेर जिले के राजकीय महाविद्यालयो के २०० विद्याथियों एवं निजी महाविद्यालयों के २०० (कुल ४००) विद्यार्थियों का चयन किया गया।

विधि—

इस शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

उपकरण—

इस हेतु शोधकर्त्री द्वारा मानकीकृत उपकरण के रूप में बुद्धि मापन हेतु डॉ. श्याम स्वरूप जालोटा द्वारा निर्मित सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी—

शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—टेस्ट का प्रयोग किया गया।

शोध के उद्देश्य—

१. राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि का अध्ययन करना।

विश्लेषण—

सारणी संख्या—१

समूह (बुद्धि)	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
राजकीय महाविद्यालय विद्यार्थी	२००	७३.८०	११.२३	३९८	१.३४	सार्थक अन्तर नहीं है।
निजी महाविद्यालय विद्यार्थी	२००	७५.३२	११.४६			

०.०१ व ०.०५ सार्थकता स्तर

परिणाम एवं व्याख्या—

सारणी संख्या १ के अनुसार राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि का मध्यमान क्रमशः ६७३.८० तथा ७५.३२ है। इन दोनों समूहों का प्रमाप विचलन क्रमशः ११.२३ व ११.४९ हैं। अतः दोनों के मध्यमानों के अंतर का टी मूल्य १.३४ है। ये मूल्य ३९८ स्वतंत्रता की कोटि हेतु ०.०५ स्तर पर विश्वास मूल्य १.९६ तथा ०.०१ के विश्वास मूल्य

२.५८ से कम है। अत: दोनों स्तरों पर सार्थक अंतर नहीं है।

अत: परिकल्पना 'राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' को पूर्णत: स्वीकृत किया जाता है।

दोनों महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि मे कोई अंतर प्राप्त नहीं हुआ है जैसा कि लेखाचित्र से भी स्पष्ट हो रहा है–

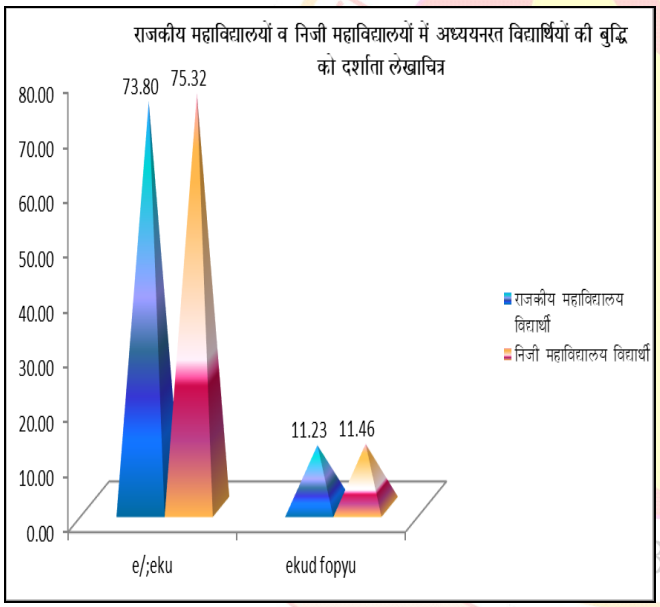

सारांश–

अध्ययन के परिणाम से राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धि पर प्रकाश डालने में मदद मिलेगी। यह शोध राजकीय महाविद्यालयों व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला व पुरूष विद्यार्थियों तथा गामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियो की बुद्धि का अध्ययन करने में भी मदद करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. **अरोड़ा डॉ. रीता, मारवाह डॉ. सुदेश (२००४–०५)**— शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार, जयपुर: शिक्षा प्रकाशन।
2. **शर्मा, डॉ. आर. ए (२०१३)**— शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. **राय, पारसनाथ**— 'शैक्षिक प्रशासन एवं विद्यालय संगठन' (लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा)
4. **डॉ. शर्मा, आर.ए.**— 'शिक्षा अनुसंधान'(आर.लाल बुक डिपों, मेरठ ९२–९३)
5. **अग्रवाल, जे.सी. (१९६६),** *एज्यूकेशनल रिसर्च इन इन्ट्रोडक्शन.* नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।
6. **गौड़, अनिता (२००५),** बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे. नई दिल्ली: राज पाकेटबुक्स. पृष्ठ संख्या–१४.
7. **ढोढियाल, एस. पाठक (१९९०),** शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुर: राजस्थानहिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–५१.
8. **पाठक, पी.डी. (२००७),** शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर. पृ.सं.२४५, ५५२,४५०.
9. **मित्तल, एम. एन. (२००५),** शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार. मेरठ: इन्टरनेशलपब्लिशिंग हाऊस. पृ. स.– २९३–२९६.
10. **मेहता, वी. आर. (२००६),** उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा . कोटा बीई.प्रथम कोटा खुला विश्वविद्यालय. पृष्ठ संख्या–७१.
11. **मेहता, वी. आर.(२००६),** अध्ययन पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति: मूल्यपरक शिक्षाकोटा: कोटा खुला विश्वविद्यालय. पृष्ठ संख्या–७०.

12. **राय, पी.एन.(१९८१),** अनुसंधान परिचय. चतुर्थ संस्करण. आगरा: विनोद पुस्तकमंदिर पृष्ठ संख्या—६३.
13. **श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा, प्रीति (२००७),** बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकासआगरा:विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या—४५९—४६०.
14. **पारीक, प्रो. मथुरेश्वर (२००५),** उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा. जयपुर: शिक्षाप्रकाशन. पेज २२.
15. **भार्गव, ऊषा (१९९३),** किशोर मनोविज्ञान. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थअकादमी. पृष्ठ संख्या—९९.
16. **रेणा, विनोद (२००८),** सार्वभौम शिक्षा की दिशा में उठे कदम. नई दिल्ली: मासू.प्र.मं.वर्ष—५२,अंक—११, पृ.सं.७.
17. **वादवानि, पुष्पा (२००३),** सुखद भविष्य की ओर पारिवारिक जीवन शिक्षा,राजस्थान: आई.ई.सी. ब्यूरो स्वास्थ्य विभाग. पृष्ठ संख्या—३३.
18. **शर्मा, रामनाथ (१९७८),** नीतिशास्त्र की रूपरेखा. मेरठ केदारनाथ. रामनाथप्रकाशन. पेज —१२०.
19. **सचदेव, डी. आर. व विद्याभूषण (२००४),** समाजशास्त्र के सिद्धान्त. नई दिल्ली: किताब महल पृ. स.— ३०७.
20. **सारस्वत, डॉ. मालती (१९९७),** शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा: आदत और शिक्षा,आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर. पृ. स. २५५.
21. **सुखिया, एस.पी. (१९७३),** शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. द्वितीय संस्करण, आगरा:विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या—४८७.
22. **हकीम, एम.ए. और अस्थाना, विपिन (१९९४),** मनोविज्ञान की शोध विधियाँ.आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या—१६९.
23. **यादव, एम.आर.** अनुसंधान परिचय. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर. पृ.सं. ७४.
24. **व्यास, हरिशचन्द्र. (२००१),** हम और हमारी शिक्षा, जयपुर: पंचशील प्रकाशन चौड़ारास्ता. पृ.सं. १७.
25. **त्रिवेदी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (२००८),** रिसर्च मैथ्डोलॉजी, जयपुर: कॉलेज बुक डिपो. पृ.सं. ३२१.

Journals and Magazines-

१. भारतीय शिक्षा शोध, पत्रिका रिव्यू, अंक—२२.

२. नई शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक संवाद की पत्रिका, वर्ष — ६२ अंक — ५.

३. जर्नल ऑफ वैल्यू एजूकेशन, अंक—५, जनवरी व जुलाई, २००५.

Survey-

1. Buch, M.B. (Ed.). First survey in Education.
2. Buch, M.B. (Ed.). Second survey in Education.
3. Buch, M.B. (Ed.). Third survey in Education.
4. Buch, M.B. (Ed.). Fourth survey in Education.
5. Buch, M.B. (Ed.). Fifth survey in Education

Webliography-

1. www.ase.org.uk
2. www.shodhganga.inflibnet.ac.in
3. www.usq.edu.au/users/albino/papers/site99/1345.html
4. www.skills_nict.com.in
5. www.google.com
6. www.education.nic.in